दिल्ली पब्लिक स्कूल, जम्मू

अभ्यास कार्य पत्र-I (अर्द्ध वार्षिक परीक्षा हेतु)

सत्र 2018-19

नाम :

कक्षा : सातवीं **विषय : हिंदी**

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

जीवन रुकने का नहीं चलने का नाम है। कुछ लोग असफलता की अवस्था में निराश होकर अपने उत्साह का दामन छोड़ बैठते हैं। वे भूल जाते हैं कि परिश्रम एवं प्रयत्न में भाग्य को बदल देने की भी क्षमता होती है। आलसी बनकर रोना-धोना व्यर्थ है। मनुष्य इस संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। अतः उसे अपना जीवन सार्थक बनाने के लिए आशा का सहारा लेना चाहिए। आलसी बनकर समय व्यर्थ बिताना अपने साथ अन्याय करना है। हमें अपने साधनों एवं क्षमताओं का प्रयोग कर प्रगति के पथ पर बढ़ना चाहिए। हमें भावात्मक कार्य की अपेक्षा रचनात्मक कार्य करने चाहिए। दुख में घबराना कायरता का प्रतीक है। हर शाम सूरज को ढलना ही है। रात को आना ही है, तो क्या अँधेरे में हाथ-पर-हाथ रखकर बैठे रहा जाए या उठकर एक दीपक जला लें। सूर्य के समक्ष दीपक की क्या बिसात! पर एक दीपक भी पर्याप्त है एक घर को रोशन कर देने के लिए।

(*i*) जीवन किसका नाम है?

(*ii*) असफलता की स्थिति में व्यक्ति का क्या कर्तव्य होना चाहिए?

(*iii*) प्रगति के पथ पर अग्रसर होने के लिए क्या आवश्यक है?

(*iv*) लेखक ने अपने साथ अन्याय करना किसे माना है?

(*v*) किसके माध्यम से मनुष्य अपने भाग्य को बदल सकता है?

2. दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

औद्योगिकीकरण हमारी प्रगति के लिए आवश्यक है, परंतु उससे होने वाले प्रदूषण को रोकना भी उतना ही आवश्यक है। इसके लिए ज़रूरी है कि कूड़े-कचरे को सुरक्षित रूप से नष्ट कर दिया जाए और हवा में मिलने वाले धुएँ को हानिकर गैसों से रहित बनाया जाए। प्रदूषण को बढ़ाने का एक प्रमुख कारण जंगलों की अंधाधुंध कटाई है। हरे-भरे जंगल न केवल वर्षा लाते हैं और ज़मीन का कटाव रोकते हैं, बल्कि हानिकारक गैसों को सोखकर हमें स्वच्छ वायु भी देते हैं। इमारती लकड़ी तथा ईंधन की बढ़ती आवश्यकता के कारण पेड़ काटे तो जाते हैं, किंतु नए पेड़ लगाने की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। इससे न केवल प्राकृतिक सौंदर्य एवं वन-संपदा का नाश होता है, अपितु रेगिस्तान का विस्तार भी होता है।

(*i*) हमारी प्रगति के लिए क्या आवश्यक है?

(*ii*) प्रदूषण के मुख्य कारण क्या हैं?

(*iii*) हरे-भरे जंगल हमारे लिए किस प्रकार उपयोगी हैं?

(*iv*) आवश्यकतानुसार नए पेड़ न लगाने का परिणाम क्या होता है?

(*v*) प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखित।

3. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

जब कोई युवा अपने घर से बाहर निकलता है तो पहली कठिनाई उसे मित्र चुनने में पड़ती है। यदि उसकी स्थिति बिलकुल एकांत और निराली नहीं रहती तो उसकी जान-पहचान के लोग धड़ाधड़ बढ़ते जाते हैं और थोड़े ही दिनों में कुछ लोगों से उसका हेल-मेल बढ़ते-बढ़ते मित्रता के रूप में परिणत हो जाता है। मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर उसके जीवन की सफलता निर्भर हो जाती है, क्योंकि संगति का गुप्त प्रभाव हमारे आचरण पर बड़ा भारी पड़ता है। हम लोग ऐसे समय में समाज में प्रवेश करके अपना कार्य आरंभ करते हैं, जबकि हमारा चित्त कोमल और हर तरह का संस्कार ग्रहण करने योग्य रहता है। हमारे भाव अपरिमार्जित और हमारी प्रवृत्ति अपरिपक्व रहती है। हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं, जिसे जो जिस रूप में चाहे, उस रूप में ढाले-चाहे राक्षस बनाए, चाहे देवता।

(*i*) युवा को पहली कठिनाई क्या होती है?

(*ii*) लोगों से हेल-मेल बढ़ते-बढ़ते किस रूप में परिणत हो जाता है?

(*iii*) हमारे आचरण पर किसका भारी प्रभाव पड़ता है?

(*iv*) किस अवस्था में हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं और क्यों?

(*v*) प्रस्तुत गद्यांश के लिए उचित शीर्षक लिखिए।

4. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

निंदा का उद्गम ही हीनता और कमज़ोरी से होता है। मनुष्य अपनी हीनता से उबता है। वह दूसरों की निंदा करके ऐसा अनुभव करता है कि वे सब निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है। उसके अहं की इससे तुष्टि होती है। बड़ी लकीर को कुछ मिटाकर छोटी लकीर बड़ी बनती है। ज्यों-ज्यों कर्म क्षीण होता जाता है, त्यों-त्यों निंदा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। कठिन कर्म की ईर्ष्या-द्वेष और इनसे उत्पन्न निंदा को मारता है। इंद्र बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है। अकर्मण्यता में उन्हें अप्रतिष्ठित होने का भय बना रहता है, इसलिए कर्मी मनुष्य से उन्हें ईर्ष्या होती है। निंदा कुछ लोगों की पूँजी होती है। बड़ा लंबा-चौड़ा व्यापार फैलाते हैं वे इस पूँजी से। कई लोगों को प्रतिष्ठा ही दूसरी कलंक-कथाओं के पारायण पर आधारित होती है।

(*i*) निंदा क्यों उत्पन्न होती है?

(*ii*) निंदा की प्रवृत्ति को कैसे समाप्त किया जा सकता है?

(*iii*) इंद्र को ईर्ष्यालु क्यों माना जाता है?

(*iv*) कर्मी मनुष्यों के प्रति ईर्ष्या का भाव किसमें होता है?

(*v*) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।